असम के चराइदेव मोईदाम

केंद्र ने इस वर्ष यूनेस्को विश्व विरासत स्थल के लिये असम में **चराइदेव मोईदाम** को नामित करने का निर्णय लिया है।

- **पूर्वोत्तर भारत में** सांस्कृतिक विरासत की श्रेणी में फिलहाल कोई **विश्व विरासत स्थल** नहीं है।
- चराइदेव मोईदाम का नामांकन ऐसे समय में महत्त्वपूर्ण हो गया है जब देश लचित बोरफुकन की **400वीं जयंती मना रहा है।**

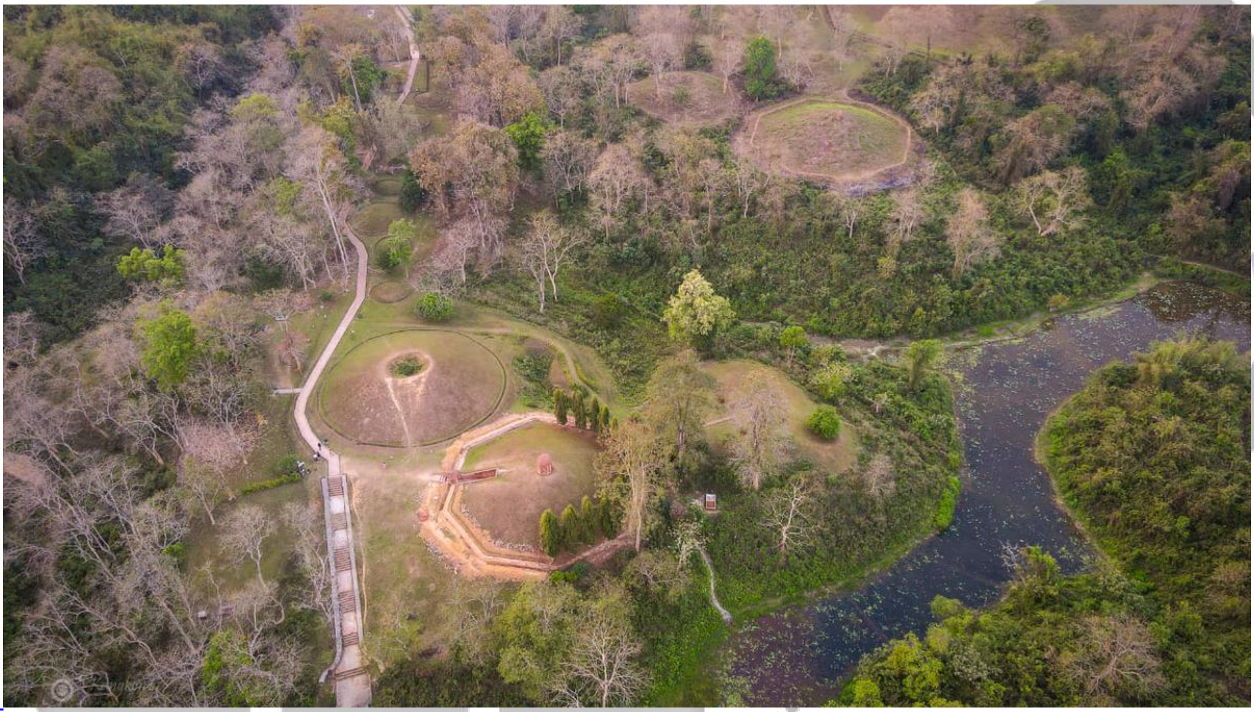

//

चराइदेव मोईदाम:

- **चराइदेव मोईदाम/मैदाम** , असम में **ताई अहोम समुदाय** की उत्तर मध्यकालीन (13वीं-19वीं शताब्दी) टीला दफन परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है।
- यह अहोम राजवंश के सदस्यों के नश्वर अवशेषों को प्रतिष्ठापित करता है, जिन्हें उ**नकी सामग्री के साथ दफनाया जाता था।**
  - 18 वीं शताब्दी के बाद **अहोम शासकों ने दाह संस्कार की हिंदू पद्धति को अपनाया** और **चराईदेव के मोईदाम** में दाह संस्कार की हड्डियों एवं राख को दफनाना शुरू कर दिया।
- अब तक खोजे गए 386 मोईदाम में से **अहोमों के टीले की दफन परंपरा के चराईदेव में 90 शाही समाधि** सुव्यवस्थित ढंग से संरक्षित, सबसे अधिक प्रतिनिधित्व वाले और पूर्ण उदाहरण हैं।

अहोम साम्राज्य:

- **परिचय:**
  - वर्ष 1228 में असम की ब्रह्मपुत्र घाटी में स्थापित, अहोम साम्राज्य ने 600 वर्षों तक अपनी संप्रभुता बरकरार रखी।
  - छोलुंग सुकफा (Chaolung Sukapha) 13वीं शताब्दी के अहोम साम्राज्य के संस्थापक थे।
  - अहोम ने छह शताब्दियों तक असम पर शासन किया था। अहोम शासकों का इस भूमि पर नियंत्रण वर्ष 1826 की **यांडाबू की संधि** (Treaty of Yandaboo) होने तक था।
- **राजनीतिक व्यवस्था:**

- अहोमों ने **भुइयाँ (ज़मींदारों)** की पुरानी राजनीतिक व्यवस्था को समाप्त कर एक नया राज्य बनाया।
- अहोम राज्य **बंधुआ मज़दूरों (Forced Labour)** पर निर्भर था। राज्य के लिये इस प्रकार की मज़दूरी करने वालों को पाइक (Paik) कहा जाता था।

- **समाज:**
  - अहोम समाज को **कुल/खेल (Clan/Khel)** में विभाजित किया गया था। एक कुल/खेल का सामान्यतः कई गाँवों पर नियंत्रण होता था।
  - अहोम साम्राज्य के लोग अपने स्वयं के आदिवासी देवताओं की पूजा करते थे, फिर भी उन्होंने हिंदू धर्म और असमिया भाषा को स्वीकार किया।
    - हालाँकि अहोम राजाओं ने **हिंदू धर्म** अपनाने के बाद भी अपनी पारंपरिक मान्यताओं को पूरी तरह से नहीं छोड़ा।
- **सैन्य रणनीति:**
  - अहोम सेना की पूरी टुकड़ी में **पैदल सेना, नौसेना, तोपखाने, हाथी, घुड़सवार सेना और जासूस शामिल थे।**
    - युद्ध में इस्तेमाल किये जाने वाले मुख्य हथियारों में तलवार, भाला, बंदूक, तोप, धनुष और तीर शामिल थे।
  - अहोम सैनिकों को **गोरिल्ला युद्ध (Guerilla Fighting)** में विशेषज्ञता प्राप्त थी। उन्होंने **ब्रह्मपुत्र नदी पर नाव का पुल (Boat Bridge) बनाने की तकनीक** भी सीखी थी।

लचित बोरफुकन:

- 24 नवंबर, 1622 को जन्मे बोरफुकन को **1671 में सरायघाट की लड़ाई में उनके नेतृत्व के लिये** जाना जाता था, जिसमें **मुगल सेना** के असम पर कब्ज़ा करने के प्रयास को विफल कर दिया गया था।
  - सरायघाट की लड़ाई **1671 में गुवाहाटी में ब्रह्मपुत्र** के तट पर लड़ी गई थी।
  - इसे एक नदी पर सबसे बड़ी नौसैनिक लड़ाइयों में से एक माना जाता है जिसके **परिणामस्वरूप मुगलों पर अहोम की जीत हुई।**
- उन्हें महान नौसैनिक रणनीतियों से **भारत की नौसेना को मज़बूत करने, अंतर्देशीय जल परिवहन को पुनर्जीवित करने** और इससे जुड़े बुनियादी ढाँचे के निर्माण हेतु जाना जाता है।
- **लचित बोरफुकन स्वर्ण पदक राष्ट्रीय रक्षा अकादमी** के सर्वश्रेष्ठ कैडेट को दिया जाता है।
  - इस पदक की स्थापना 1999 में रक्षाकर्मियों को बोरफुकन की **वीरता और बलिदान का अनुकरण करने हेतु प्रेरित करने के लिये** की गई थी।

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/assam-s-charaideo-moidams